श्री शारिका देवी चर्चास्तवः

श्री रामेश्वराचार्य विरचितः

श्री शारिका देवी चर्चास्तवः

सम्पादिका

प्रभा देवी

हिन्दी रूपान्तरकार

प्रो० मखनलाल कुकिलू

प्रकाशक

ईश्वर-आश्रम ट्रस्ट

गुप्तगंगा, निशात

(कश्मीर)

शारिका पब्लिशिंग, दिल्ली द्वारा प्रकाशित

(सर्वाधिकार ट्रस्ट के अधीन)

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

ईश्वर आश्रम
२, महेन्द्र नगर,
कनाल रोड, जम्मू

•

श्री चमनलाल जी
बी-१५, पम्पोश इन्क्लेव
ग्रेटर कैलाश-I
नई दिल्ली

मूल्य : 24.00

दो शब्द

(१)

प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद रामेश्वर झा हमारे गुरुवर्य श्री ईश्वर-स्वरूप जी से मिलने ई० सन् १९५८ में आये थे। प्रथम मिलन में ही गुरुवर्य ने उन्हें शक्तिपात करके अनुगृहीत किया। आचार्यजी ने उनका शिष्यत्व होना स्वीकार किया और वे उन्हें अपना गुरु मानने लगे। गुरुवर्यसे इस प्रथम दर्शन की वार्ता का उल्लेख आचार्य जी ने अपनी पुस्तक "पूर्णता-प्रत्यभिज्ञा" में पद्यों में किया है।

मैं भी अपनी बड़ी बहन मनस्विनी शारिका देवी जी के साथ आश्रम में ही रहती थी। आचार्य जी की अपूर्व कृपा हम दोनों पर थी। देवी जी की अन्तर्मुख अवस्था को देख कर आचार्य जी हर्षित होते थे और उन्हें शैवी साधना के पारखी मानते थे।

जीवन-पर्यन्त, आचार्य जी का यह नियम रहा कि वे मुझे ईश्वर-स्वरूप जी के जन्मोत्सव पर श्रद्धांजलि के रूप में श्लोक लिखते रहे। साथ ही देवी जी के प्रति भी श्लोक लिख कर अपने उद्गारों

को प्रकट करते रहे।

सच तो यह है आचार्य जी सरस्वती की साकार मूर्ति थे। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। वे व्याकरणाचार्य तथा न्यायाचार्य की उपाधियों से विभूषित थे। बैठे-बैठे वे संस्कृत में श्लोक बना देते थे। वे मुझे वाराणसी तथा अपनी जन्मभूमि मिथिला से पत्र, पद्यों में भेजते रहे। इतने वर्षों से मैंने इन पत्रों को सुरक्षित रखा।

दुर्भाग्यवश ई० सन् १९९१ में गुरुवर्य तथा देवी जी के महाप्रयाण के बाद, दोनों महान विभूतियों से वंचित होने पर, इस निधि को खोलने का समय मिला। इन अमूल्य श्लोकों का संकलन करके जनता के सम्मुख हम इनको पुस्तिका का रूप दे रहे हैं।

स्वामी जी तथा देवी जी के अनन्य भक्त प्रो० मक्खनलाल कुकिलू ने भी देवी जी के प्रति जिन सरस श्लोकों की रचना की है, उनको भी हमने इस पुस्तिका में संकलित किया है। इन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इन सभी श्लोकों का हिन्दी रूपान्तर भी कर दिया। उनके प्रति हमारा आभार है। गुरुवर्य तथा देवी जी उन्हें तात्विक शांति

दें।

हम श्री सुरेश जी सोपोरी के भी आभारी हैं, जिन्होंने इस पुस्तिका को छापने में सुविधा प्रदान की।

जनता यदि इन श्लोकों को पढ़कर लाभान्वित होगी तो हमारा यह प्रयास सफल होगा।

---

(२)

स्वनामधन्या, ब्रह्मवादिनी, आदर्श गुरु-भक्ता श्री शारिका देवी जी के नाम से कौन कश्मीरी पंडित घराना परिचित नहीं है। इनका जन्म श्रीनगर में ई० सन् १६१३ मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया को, पंडित जियालाल जी सोपोरी के यहां हुआ था। इनकी माता का नाम राधिका रानी था।

बचपन से ही आत्मा की गवेषणा करने में लगी हुई कन्या का आद्योपान्त जीवन, त्याग, तपस्या और वैराग्य की भट्ठी में तपाये गये चमकते हुए सोने के समान देदीप्यमान रहा। इनके माता-पिता, कन्या रत्न का झुकाव परमार्थ की ओर देख कर, मन ही मन विचारते थे कि आगामी जीवन इनका कैसे बीतेगा।

किसी ने सत्य ही कहा है "होनहार बिरवान के चिकने-चिकने पात"। बालिका ने चौदहवें वर्ष में पदार्पण किया तो इन्हें गुरु की आवश्यकता पड़ी। इनकी बड़ी भाभी गुणवती के छोटे भाई श्री लक्ष्मण जी, जन्म से ही योगिराज थे। वह अपनी बहन के पास आते रहते थे। वहां उन्हें शारिका जी अन्तर्मुख अवस्था में दिखाई देती थीं।

वह शारिका जी से बात तो कुछ करते न थे, उन्हें देखते ही इन्हें पूर्व-जन्म की स्मृति आ जाती थी। इन्हें अपनी शिष्या बनाने की मूक-प्रेरणा उन्हें मिलती रहती थी।

कुछ वर्षों के बाद दैवलीला ऐसी हुई कि दोनों महान सन्तों ने विवाह न करके ईश्वर-पर्वत के दामन में, अपने-अपने मकान, आमने सामने बनवाये और दोनों गुरु और शिष्य बन कर रहने लगे। इस शिष्यत्व को अन्त तक, देवी जी ने जिन भयंकर परीक्षाओं को झेल कर निभाया, इसका विस्तृत वर्णन तो हम अलग से उनकी जीवनी में करेंगे। यहां तो केवल परिचय करा दिया।

इनका निधन वि० सं० २०४८ तद्नुसार ई० सं० १९९१ फाल्गुण कृष्ण पक्ष तृतीया को जम्मू में हुआ। इससे छः महीने पहले शारिका जी ने हंसते हुए मुझसे कहा था कि शिवरात्रि के पर्व पर मैं आश्रम में नहीं हूंगी। उस समय इस बात का मर्म, मैं समझ न पाई। सन् १९९०, १५ दिसम्बर से देवी जी का शरीर ढीला हो गया। वे कम बोलने लगीं। मेरे पूछने पर उत्तर मिला- अब बातें ही क्या करनी हैं। इसके बाद वह

अन्तर्मुख रहने लगीं। १९९१, २९ जनवरी मंगलवार प्रातः नौ बजे देवी जी को वायुयान से जम्मू ले गये।

उनके जाने के बाद ईश्वर-स्वरूप जी कह बैठे कि अब शारिका जी लौट कर नहीं आयेंगी। अब तो हमें ही जम्मू जाना पड़ेगा। ठीक यही हुआ। फाल्गुन कृष्ण-पक्ष तृतीया को प्रातः ३ बजे देवी जी ने यह भौतिक शरीर छोड दिया। हमें आश्रम में सूचना मिली तो गुरुवर्य और मैं वायुयान से जम्मू पहुंचे। वहां पहुंचते ही ईश्वर-स्वरूप जी ने देवी जी को निःस्पन्द रूप में देखा तो शंकर की भांति तांडव नृत्य करने लगे। सभी भक्त-जन इस अलौकिक नृत्य को मंत्र-मुग्ध होकर देख रहे थे।

जब देवी जी का शरीर दाह-संस्कार के लिए ले जाने लगे तो गुरुवर्य ने उच्च स्वर में कहा कि "जाओ हम भी छः महीने के बाद आ रहे हैं।"

महाराज जी की बात अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई। ई० सन् १९९१, तद्नुसार वि० सं० २०४८ आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्थी को गुरुदेव ने भी दिल्ली में महाप्रयाण किया।

सच तो यह है कि गुरुदेव ने अपनी अनन्यभक्ता देवी जी के प्रति अथाह स्नेह, अनुकंपा और सौहार्द्र की एक गंगा बहा दी। अपनी शिष्या के और्ध्वदैहिक कर्म में तन्मयता से भाग लिया और हरद्वार जाकर उनका अस्थि प्रवाह भी गंगा जी में अपने हाथों किया। इतना ही नहीं पूर्ण आवेश में आकर उन्होंने साधना के पथ पर उन्नतोन्नत होने के लिए मन्त्ररत्नसार में एक और मन्त्र रत्न डालकर जौहरियोंको आश्चर्यचकित किया :

"परभैरवलीनीभूता आत्मशक्तिः
श्री शारिका देवी।"
"परभैरवलीन्यै पराशक्त्यै श्री
शारिका देव्यै नमो नमः।"

गुरु-शिष्यत्व का अपूर्व संगम, गुरुजनों की अपनी शिष्या पर उदारता और अनुकंपा का जीता जागता चित्रण यदि कहीं देखना हो तो उसका ज्वलन्त उदाहरण, ईश्वर-स्वरूप जी और शारिका देवी जी को छोड़कर शायद ही कहीं मिले। वाणी में इतनी शक्ति ही नहीं है कि कुछ और कहे।

जिन भाग्यशाली शिष्यों को ईश्वर-आश्रम में

आकर दोनों महान विभूतियों के पास उठने-बैठने का सुअवसर मिला है वे स्वयं उन आनन्द-क्षणों का मूल्य समझ सकते हैं। हम तो यही कहेंगे–

"नहि त्वदन्यः कश्चिदपीह देव!
लोकत्रये दृश्यतेऽचिन्त्यकर्मा"

अर्थात्

"हे देवता ! इस संसार में आप से भिन्न अनिवर्चनीय कर्म करने वाला तीनों लोकों में कोई नहीं दिखाई देता।

गुरुकृपावगाहिनी
प्रभा देवी

फाल्गुण कृष्णपक्ष तृतीया
६ फरवरी १९६३

ॐ

जय गुरुदेव

SHARIKA DEVI

She left quietly and discretely as was her nature. She was spent like a flame, without resistance, going to the abode of Shiva, where she belonged. She has taken bath in a sea of –bliss, as she told her Master recently - so what else was there to say or do? She said what was to be said,and she had no more to say,because to her everything was clear in that light of the Absolute. Her body had become as light as her mind. Nothing was heavy in her,because she was transparent to the Divine Grace.

I cannot forget her last blessing: I knew it was the last. On the day I arrived as if called by her, she was already lying down and I was shocked to see her so weak. I prostrated and she blessed me with such an affectionate carress on my head. When I sat at her feet, she got up and opened her eyes wide. She seemed to pierce me with her look which was both, full of love, and full of strength, firm as she was

established within. I was not prepared. I could hardly bear her look. Had I been ready, she could have given me shaktipata in that very moment. Her eyes were saying everything, summing up a life at the feet of the Lord, they were telling that she had reached the heights of samavesha, they were telling that it requires love, gentleness and firmness and a devotion that is undisturbed by any inner or outer shakings. There was a quiet, inner strength in her which, combined with a discrete motherly love, made her a symbol of peace. All that was in her eyes, and a push to have the courage to proceed on this path without a wavering of awareness, devotion and determination. That look was so strong, although her body was almost non-existing, so weak and thin. Her whole soul was in her eyes.

Great saints are often hidden, quiet and discrete. Deviji was a quiet presence near her great Master, effacing herself in His service. Although she had attained self-realization, she assumed a humble role, never showing off her spiritual state or her knowledge. But in her discrete way she was an important adviser to the devotees, mainly female. She helped me

immensely in coming nearer to the Master, to act in the right wayand in the right moment, to understand his hints and his way of guiding me. Without her I would have despaired many times. She had a motherly eye to tell me when I could go near her, do pranam, or when I should stay quiet until she would permit me. Only a soul like her who was purified by the constant contact with the Lord could act in this way, guiding inexperienced disciples like me. Sometimes she would intervene mediator. He could never refuse her humble but firm request. When I was desperate because the Master had rejected me many times, her one word was reassurance: "He is testing your firmness". If for any reason I did not get prasad, she would make it up by giving me prasad, and I knew it was he who was giving it through her.

A few times it was given to me that I could see her glory. She was then bathed in the same light as her Master, a light which was flowing from within, and flowing all over her body. She then showed me how firmly she was established in her inner nature, 'svasvarupa', in a quiet, firm clarity. She was beyond the states

of emotional devotion, and the contrast between her quiet, humble presence and the mental and physical noise of other devotees was evident. Her very simplicity showed that she was established in the Divine state in any condition - cleaning vegetables, talking to devotees or serving her Master, not to talk of the times of samavesha which she used to hide from others.

Once she told me in a serious mood: People come here for all kinds of purposes and selfish ends, but very few come for God. This was her experience of many years at the feet of the Master. I often felt, it is as if somebody wants to give gold, and the receiver only asks for potatoes. She herself had such gold to give - but who was ready to receive it?

Once I wrote to thank her for her gracious kindness, and she replied through Prabhaji: It is the nature of the river to give freshness and purity to those who come to bathe in it, there is no special merit in the river giving it. This was her natural way of being, and her expressions were equally natural.

At the end she reminded me of my last Darshan of Ma Anandamayi: in a frail body

there was no ego obstructing the Divine presence, whereas our 'persons' consist only in obstruction. Once this obstruction is gone, the Divine flows freely through the whole of space.

Now that even the last obstruction is gone, her body itself, there is no end to this flowing of grace. She is more present now than when she was in the body. My only prayer is to be a receiving vessel, empty, receptive and pure.

Bettina Baumer

ब्रह्मवादिनी शारिका जी

प्रणाम

पद्मपत्र पानी पर तैरता है, पर भीग नहीं पाता; पानी की बूंद को अपने ऊपर जमने नहीं देता, अपने अंदर पचने नहीं देता। न्यारा रहता है, निर्लिप्त। फिर भी रूखा-सूखा नहीं; चिकना और सुथरा, सुस्निग्ध ! कर्कश नहीं, कोमल, फुसफुसा नहीं, सुषम।

कुछ ऐसा ही निरालापन था शैवसाधिका शारिका जी का। निरन्तर चर्या-लग्न रहकर भी कितनी सहज। सहज साधना की सजीव पराकाष्ठा; विश्वात्मक और विश्वोत्तीर्ण के तालमेल की विश्वसनीय प्रतिमा। कठोर से कठोर प्रभञ्जन में भी धीर-गम्भीर मुस्कान की अकंपित लौ। अपने लिए कुछ भी अलग न रखते हुए सबमें अपनत्व का उज्ज्वल आलोक बांटने वाली शक्तिधारा। ईश्वराश्रम की कुलदेवता ! निर्वाण पाने पर भी एक अजस्र प्रेरणा बनी हुई ऐसी सहजयोगिनी को प्रणाम!

–पृथ्वीनाथ पुष्प

दिल्ली, १९ जनवरी, १९९३

ॐ

श्रीगुरवे नमः

श्री रामेश्वराचार्य रचित श्री शारिका देवी चर्चास्तवः।

अनुयान्तीं शिवं नौमि श्रीशिवां शारिकां सतीम्।
यस्याश्च कृपया देव्याः सिध्येदस्माकमीप्सितम्।।

मैं शिव रूप गुरु का अनुसरण करने वाली सती पार्वती शारिका जी को प्रणाम करता हूँ। हमारी मनोकामनायें इस देवी की कृपा से परिपूर्ण हों।।1।।

या विद्या भविनां भयार्तिहरणे नित्योदिता शाश्वती
पूज्या या शरणार्थिनां शरणदा दुःखौघ विध्वंसिनी।
या शैवी भुवमाश्रिता भगवती शक्तिः परा पार्वती
तां नित्यं प्रणमाम्यहं नतशिरः श्री शारिकां सर्वदाम्।।

शिव की पराशक्ति भगवती पार्वती के रूप में, इस धरती पर आ उतरी हुई, पूजा के योग्य, संसारी प्राणियों के भय और पीड़ा को दूर करने में सदा

उदित रहने वाली, सनातन विद्या, सब कुछ देने वाली, दुःखों के समूह को नष्ट करने वाली और शरणागतों को शरण देने वाली श्री शारिका देवी को मैं नतमस्तक होके सदा प्रणाम करता हूं।।२।।

या ब्रह्मादि सुरेन्द्र देव दनुजैर्नित्यं समाराधिता
श्रेयो दानसमुद्यतं पदरजो यस्याः सदा मादृशे।
एका या भुवन त्रयस्य जननी पूज्या सतां शान्तिदा
देवी सा जयतात्प्रशस्तिमहिमा श्री शारिका सर्वदा।।

ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इन्द्र आदि देवताओं और असुरों के द्वारा भी सदा जिसकी आराधना अच्छी तरह से की जा रही है। जिसकी चरण-धूलि मुझ जैसे व्यक्ति को कल्याण करने के लिए सदा तत्पर है। जो तीनों भुवनों में पूजी जाने वाली अद्वितीय और सज्जनों को शान्ति देने वाली हैं। प्रशंसनीय महिमा वाली उस श्री शारिका देवी की सदा जय जयकार हो।।३।।

तस्यै नमो मे करुणैक मूर्त्यै
श्री शारिकायै जगदीश शक्त्यै।

तनोति विश्वं शिवभानंद या
ददाति मुक्तिं सह भुक्तिसम्पदा।।

दया की एकमात्र मूर्ति तथा जगत् पिता की परमशक्ति उस श्री शारिका देवी को मेरा नमस्कार हो, जो शिवत्व का भान कराने वाले इस जगत का विस्तार करने के साथ-साथ भोग सम्पदा और मोक्षलक्ष्मी को भी प्रदान करती है।।४।।

त्वं शारिके! मादृश सेवकानां
हृद्या हृदिस्था किल कामधेनुः।
मुक्तिप्रदा मुक्ति विधान कर्त्री
सर्वप्रदे! मंगलमातनोषि।।

हे सब कुछ देने वाली श्री शारिका देवी! निश्चय ही आप मुझ जैसे सेवकों के हृदय में ठहरने वाली कामधेनु सी हो। आप मुक्ति प्रदान करने वाली और मोक्ष प्राप्ति का एकमात्र कारण हो। आप सबों का कल्याण करती हो।।५।।

श्रीच्छादि नानाविध शक्ति धात्र्यै।
श्री शंभुवामांग शुभासनायै।

श्री शारिकायै करुणात्मिकायै
देव्यै नमो मे शिवता प्रदायै।।

इच्छा, ज्ञान, क्रिया आदि अनेक प्रकार की शक्तियों का पालन करने वाली, अर्धांगिनी के रूप में शंकर के वामभाग में विराजमान बनी हुई, शिवता को प्रदान करने वाली और दया से परिपूर्ण शारिका देवी को मेरा प्रणाम हो।।६।।

श्रद्धाकृता यैस्तव पाद पद्मे-
ऽप्यध्यात्म विद्याऽधिगता परा तैः।
त्वय्येव भक्त्या तु सुरैर्मनुष्यैरै-
श्वर्यमाप्तं सुखदं समृद्धम्।।

हे शारिका देवी! जिन्होंने आपके चरण कमलों पर श्रद्धा रखी उन्होंने ही सर्वश्रेष्ठ अध्यात्म विद्या प्राप्त कर ली। आप ही पर, भक्ति रखने के फलस्वरूप देवों और मनुष्यों ने ऐश्वर्य और सुख देने वाली समृद्धि को पा लिया।।७।।

श्री शारिके! त्वं जगतां प्रतिष्ठा
ज्ञानस्य धर्मस्य शुभस्य चापि।

त्वं सेविता येन हृदा मनोज्ञा
ते प्रापि सर्वेश्वरता नृलोके।।

हे शारिका देवी! आप ही इस संसार में ज्ञान-धर्म और कल्याण को स्थापित करने वाली हैं। जिन्होंने आप मनोरमा की हृदय से सेवा की उन्होंने ही इस मनुष्य लोक में सर्वेश्वरता को प्राप्त किया।।८।।

कारुण्य पूर्णे नयने त्वदीये
यदैव यस्मिन् पततः स्वभावात्।
तदैव तस्यानुगता पतन्ति
या सन्ति दिव्या ननुसिद्धहस्ता।।

शक्तिपातवश जब कभी आपकी दया-भरी दृष्टि किसी पर पड़ती है तभी सारी दिव्य विभूतियां उसके वश में होती हैं।।९।।

त्वद् दर्शनाच्छान्तिमुपैति लोको
हित्वामलं चित्तगतं समस्तम्।
त्वत्पादपद्मस्य रजांसि रोगान्
निघ्नन्ति सर्वान् हृदयेऽर्पितानि।।

साधारण प्राणी भी आपके दर्शन से अपने सभी

मनोगत मलों को त्यागकर शान्ति पा लेता है। हृदय पर लगे हुए आप के चरण कमलों के धूलिकण सभी रोगों को नष्ट करते हैं।।१०।।

सौभाग्य सम्पत्तिचयेन लभ्यं
त्व त्पाद पद्‌मच्युति धूलिमात्रम्।
येनापि केनापि धृतं ललाटे
तेनापि सिद्धिस्तु परापरापि।।

सौभाग्यशाली प्राणियों से ही पाने के योग्य आपके चरण कमलों से गिरी हुई धूलि जिस किसी ने अपने माथे पर लगाई उसने भी सर्वश्रेष्ठ परा सिद्धि प्राप्त कर ली।।११।।

श्री शारिकायै विभुता प्रदात्र्यै
कुर्यां नमोऽभीष्टवर प्रदात्र्यै।
तुभ्यं नमो मे मनसापि वाचा
स्वानन्दशक्त्यै धृतविग्रहायै।।

मनचाहे वर तथा वैभव को प्रदान करने वाली मूर्तिमती निजानन्द शक्तिरूपा श्री शारिका देवी को बार-बार मेरा प्रणाम हो।।१२।।

काश्मीरिकी त्वं ननुशारदासि
क्षीरे वसन्ती शुभदा भवानी।
त्वं देवि! सत्यं हरिपर्वतस्था
जनस्य दुर्गार्तिहरी च दुर्गा।।

देवी! निश्चय से आप ही कश्मीर राज्य की प्रसिद्ध शारदा देवी हो, आप ही क्षीर सागर में रहने वाली कल्याणकारिणी क्षीरभवानी हो, आप ही हारी पर्वत पर ठहरने वाली शारिका माता हो और आप ही प्राणियों के असाध्य कष्टों को हरण करने वाली दुर्गा हो।।१३।।

श्री शारदा पीठवराधिराज्ञी
शक्तिः शिवस्यास्य महेश्वरस्य।
वागीश्वरी सर्वविधान दक्षा
हे शारिके! किं स्मरसीव न स्वाम्।।

हे शारिका देवी! क्या आपको अपने विषय में इस बात का स्मरण नहीं कि आप ही सर्वश्रेष्ठ शारदा पीठ की महारानी हो, आप ही शिव की शक्ति हो, और आप ही सभी कार्यों को सम्पन्न

करने में निपुण वागीश्वरी हो।।१४।।

यथापुरं त्वं प्रकटप्रभावा
भवातिशीघ्रं कुरु मा विलम्बम्।
ज्ञानामृतांशुप्रभया समन्तात्
तमोजमज्ञानमपाकुरु त्वम्।।

हे शारिका देवी! आपने बचपन में ही जिस महान प्रभाव को दर्शाया था, अपने उसी प्रभाव को बिना विलम्ब किये इस समय भी शीघ्र प्रकट करिये। हे माता! तामसिक वृत्तियों से उत्पन्न मेरे अज्ञान को अपनी ज्ञानरूपी अमृत किरणों की प्रभा से दूर करिये।।१५।।

किं त्वामहं वच्मि पुनः पुनस्ते
पादौ नमन्नस्मि सुखं शयानः।
ऐश्वर्यराज्ञी भवती भवानी
सर्वप्रदास्तीति न मेऽस्ति चिन्ता।।

हे शारिका देवी! मैं आपसे और अधिक क्या कहूं? (मेरी इच्छा है) कि निश्चिंत होके मैं आप के चरणों को बार-बार नमन करता रहूं। हे मां!

आप तो सब कुछ देने वाली और सभी ऐश्वर्यों की महारानी हो, अतः मुझे किसी बात की चिंता नहीं है।।१६।।

निखिलविश्वमिदं मदमोहदं
यदितरस्य विभाति भयप्रदम्।
तदमृतं कृपया तव भाति मे
किमधिकं मम लभ्यमतः परम्।।

मद और मोह से पूर्ण यह सारा संसार जो अज्ञानियों को भयदायक दीखता है, वही संसार आपकी कृपा से मुझे अमृतमय दिखाई देता है। इससे अधिक मुझे किस वस्तु की आवश्यकता है।।१७।।

श्री शारिकायुग्म पदारविन्दं
विघ्नौघविध्वंसविधान दक्षम्।
नित्यं श्रयेऽहं हृदि भोगमोक्ष-
भृगैर्न यस्य त्यजतः समीपम्।।

विघ्नों के समूह को नष्ट करने में तत्पर श्री शारिका देवी के चरण कमलों को मैं सदा हृदय

में संजोये ठहरा हूं जिन पर भोगमोक्ष रूपी भंवरे निरन्तर मंडराते नज़र आते हैं।।१८।।

त्रिशक्तिरूपा क्षमयाति पूर्णा
सदानुरक्ता गुरुपाद पद्मे।
येच्छाविहीना दययातिपूर्णा
सा शारिका मंगलमातनोतु।।

वह शारिका देवी हमें कल्याण करें जो इच्छा,ज्ञान तथा क्रियारूपा हैं। दया और क्षमा से पूर्ण हैं। सांसारिक इच्छाओं से विमुख हैं और अपने गुरु महाराज ईश्वरस्वरूप के चरण कमलों पर सदा अनुरक्त हैं।।१६।।

ज्ञानक्रिये तस्य विभासमाने
शक्ती महेशस्य शरीरवत्यौ।
श्री शारिका स्वच्छतम प्रभे मे
वन्दे सदा ते मम वन्दनीये।।

वन्दनीया श्री शारिका देवी और संवित्प्रतिभारूप प्रभा को मैं प्रणाम करता हूं जो गुरु महाराज ईश्वरस्वरूप की साकार चमचमाती ज्ञानशक्तिऔर

क्रियाशक्ति ही हैं।।२०।।

यस्याः प्रभायाः प्रतिमा प्रभास्ति
यदाशिषाऽहं गतभेदबंधः।
सा शारिका मे भवतु प्रसन्ना
समस्त सम्पत्प्रविकासनाय।

जिस शारिका देवी की प्रतिमा संवित् प्रभा जैसी है और जिसके आशीर्वाद से मैं सभी भेदबन्धनों से मुक्त हुआ हूं वही देवी जी मुझे ऋद्धि सिद्धियों से परिपूर्ण करने के लिए मुझ पर सदा प्रसन्न होवें।।२१।।

जानाति या नैव मृतिं च जन्म
नित्यास्ति या पंचमकृत्यरूपा।
देहात्मिका भाति शिवानुगा या
सा शारिका हन्तु जनस्य मायाम्।।

जो जन्म और मरण से परे हैं। सनातन हैं। सदा अनुग्रहस्वरूपा हैं और देहधारिणी बनकर अपने शिवस्वरूप गुरु का अनुसरण करती हैं वही शारिका देवी मेरी सारी अविद्या को दूर करें।।२२।।

गुरोः महेशस्य महीयसी या
श्री शारिका ज्ञान विमर्शरूपा।
वन्दे महामोहविनाश दक्षां
सिद्धैः सदा सेवित पाद पद्माम्।

अपने गुरु महाराज ईश्वरस्वरूप की आदरणीया, महान मोह को दूर करने में चतुर तथा सिद्धयोगियों से सेवित चरण कमलों वाली, ज्ञान और विमर्श रूपा श्री शारिका देवी को मैं प्रणाम करता हूं।।२३

त्वत्पाद स्मरणात् देवि ! शब्दब्रह्मविजृम्भितम्।
यथा तथा स्तुतासि त्वं कल्पितं नात्र किञ्चन।।

हे देवी! आपके चरण कमलों के स्मरणमात्र से शब्द ब्रह्म का विकास हुआ और जिस किसी प्रकार से यह आपकी स्तुति मैंने की, इस विषय में कुछ भी बनावटीपन नहीं है।।२४।।

प्रणम्या सहजानन्दा देवी सा ब्रह्मवादिनी।
यद् दयादृष्टि पूतोऽहं भ्राजे स्वानन्द निर्भरः।।

ब्रह्मवादिनी सहजानन्दस्वरूपा देवी शारिका जी प्रणाम करने योग्य हैं, जिसकी कृपादृष्टि से पवित्र

बना हुआ मैं, अपने ही आनन्द रस में डूबा हुआ विराजमान हूं।।२५।।

श्रीमत्यै शारिका देव्यै महाशक्त्यै शिवस्य मे।
नमो नित्यं महादेव्यै कृपामूर्त्यै पुनर्नमः।।

शिवरूप गुरु महाराज की महाशक्ति, महादेवी और दयामूर्ति श्री शारिका देवी को मेरा बार-बार प्रणाम हो।।२६।।

सा शारिका महादेवी जयतात्सर्वकामदा।
मोक्षमार्ग प्रदा शान्ता शान्तातीता कलानुगा।।

सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली, महादेवी, मोक्षमार्ग को देने वाली, शान्त स्वभाव वाली, और शान्तातीत कला पर स्थित (अर्थात् शिव तत्व पर स्थित) शारिका देवी की जय जयकार हो।।२७।।

तां विद्यां परमां शक्तिं देवीं श्री शारिकामहम्।
नित्यं वन्दे सदा स्वस्थां कारुण्यरस निर्भराम्।।

मैं करुण रस से लबालब भरी हुई, अपने स्वरूप में सदा विराजमान, ज्ञानमयी महानशक्ति श्री शारिका देवी की सदा वन्दना करता हूं।।२८।।

आद्योच्चारणमेवाहमुपदेशः प्रकीर्तितः।
उपदिष्टो यया भ्राजे देवी तां नौमि शारिकाम्।।

उपदेश की परिभाषा के विषय में पूछने पर शारिका देवी ने कहा था कि वर्णमाला का पहला स्वर 'अ' ही 'अहं' इस रूप में उपदेश कहा जाता है। इसी 'अहं' उपदेश से देवी जी के द्वारा दीक्षित किया गया मैं उसे बार-बार प्रणाम करता हूं।।२६।।

आराध्या सर्वदेवीनां देवी श्री शारिकाभिधा।
या सा कुर्यात् दयां मह्यं नमते दीनवत्सला।।

जो शारिका नाम की देवी सभी देवियों से आराधनीया है, वह दीनों की प्यारी देवी जी, प्रणाम करने वाले मुझ पर दया करें।।३०।।

पूजितं शारदाम्भोजैः शारिकाचरणाम्बुजम्।
प्रणमन् प्रणतार्तिघ्नीं देवीं वच्मि किमप्यहम्।।

श्री शारिका देवी के चरण कमलों की मैंने शारदीय कमल पुष्पों से अर्चना की है। वह प्रणाम करने पर विनत व्यक्तियों की पीड़ा को नष्ट करती

हैं। मैं उस देवी के विषय में क्या कहूं।।३१।।

श्रीमत्यै शारिका देव्यै दयार्द्रायै पुनर्नमः।
यत्कृपा सततं मह्यं ददातीष्टं मनोगतम्।।

दया से आर्द्र बनी हुई श्री शारिका देवी को मेरा बार-बार प्रणाम हो जिसकी कृपा निरन्तर मेरी अभिलषित मनोकामनाओं को पूर्ण करती है।।३२।।

श्री शारिकायाः पदाम्बोजे प्रणति भ्रमरी मम।
करोत वसतिं नित्यं रसास्वादनलोलुपा।।

महानन्द रस की लोभी मेरी प्रणाम रूपी भंवरी श्री शारिका जी के चरण कमलों पर सदा मंडराती रहे।।३३।।

तच्छक्ति विग्रहां नौमि देवीं श्री शारिकां सतीम्।
प्रणतार्ति विनाशाय या जागर्ति अहर्निशम्।।

साकार संवित् शक्ति स्वरूपा सती शारिका देवी को मैं प्रणाम करता हूं जो अपने भक्तों की पीड़ा को दूर करने के लिए रात दिन जागती रहती हैं।।३४।।

वन्ध्या सा निखिलैर्देवी शारिका ब्रह्मवादिनी।
स्तूयते सिद्धिलाभार्थं श्रद्धया परया मया।।

ब्रह्मवादिनी वह शारिका देवी सभी प्राणियों से वन्दना करने के योग्य है। परमसिद्धि को पाने के लिए मैं, बड़ी श्रद्धा से उनकी स्तुति करता हूं।।३५।।

जन्म मृत्युजरापध्नी पूज्या सा शारिका मम।
सुप्रसन्ना सदाभूयात् लोकानुग्रह कारिणी।।

जन्म, बुढ़ापा और मृत्यु को नष्ट करने वाली पूजा के योग्य, सामान्य जनता पर अनुग्रह करने वाली वह शारिका देवी मुझपर सदा प्रसन्न होवे।।३६।।

सर्वतः परिपूर्णा सा शक्तिर्मां पातु सर्वदा।
दिव्यौघोत्ससमादेवी शारिका भुक्ति मुक्तिदा।।

सम्पूर्ण रूप से परिपूर्ण शक्ति वाली, भोग और मोक्ष को देने वाली, और स्वार्गीय प्रवाह की राशि जैसी वह शारिका देवी मेरी रक्षा करे।।३७।।

नमस्तस्यै महादेव्यै शारिकायै पुनः पुनः।
यत्प्रभापरिपूतोऽहं शाक्तोपायेऽस्मि पण्डितः।।

उस महादेवी शारिका जी को मेरा बार-बार प्रणाम हो जिसकी संवित् प्रतिभा से पवित्र बना हुआ मैं, शाक्तोपाय में परिपक्व बन गया हूं।।३८।।

देवी श्रिया युतां नौमि सर्वक्लेशापहारिणीम्।
श्री शारिकां सुधापूर्णां पूर्णानन्द प्रदायिनीम्।।

पूर्णानन्द को देने वाली, अमृतरस से लबालब भरी हुई, सभी दुःखों को मिटाने वाली लक्ष्मी की संगिनी देवी श्री शारिका को प्रणाम करता हूं।।३९।।

नमस्तस्यै महादेव्यै शारिकायै पुनः पुनः।
यत्कृपा परिपूतोऽहं स्वस्मिन् वेद्मि जगत्त्रयम्।।

उस महादेवी शारिका को मेरा बार-बार प्रणाम हो जिसकी दया से पवित्र बना हुआ मैं अपने आप में ही तीनों भुवनों (जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति) को जानता हूं।।४०।।

श्रीमती शारिकादेवीं नित्यानुग्रहरूपिणीम्।
वन्दे नित्यं परां शक्तिं भक्तानुग्रहकारिणीम्।।

सदा अनुग्रहस्वरूपा, अपने भक्तों पर अनुग्रह करने वाली पराशक्ति श्री शारिका देवी को सदा

मैं प्रणाम करता हूं।।४१।।

देवीं श्री शारिकां नौमि श्रद्धया भक्तवत्सलां।
यदनुग्रहतोवर्ते भुव्येव परमेश्वरः।।

अपने भक्तों की प्यारी श्री शारिका जी को श्रद्धा से मैं प्रणाम करता हूं, जिसके अनुग्रह से मुझे इस पृथ्वी पर ही परमेश्वर की स्थिति सम्भव हो सकी।।४२।।

शकारादि महादेवीं नौमि स्वाश्रितवत्सलाम्।
सुख सत्कार सद्भाव संवित्संदोहसूतिदाम्।।

अपने नाम के आरंभ में 'श' अक्षर को धारण करने वाली अपने भक्तों की प्यारी महादेवी शारिका जी को मैं प्रणाम करता हूं जो सुख, आदर, सद्भाव और संवित् राशि की जननी है।।४३।।

सर्वाभिलाष सम्पूर्त्यै यत्कृपैका प्रगल्भते।
तां नौमि शारिकां साध्वीं सर्वमंगलकारिणीम्।।

सर्वमंगल करने वाली उस सती शारिका जी को प्रणाम करता हूं जिसकी अद्वितीय कृपा-दृष्टि

सभी इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ है।।४४।।

भेदबुद्धिरविद्येयं त्यक्ता देव्या यया पुनः।
तां शारिकां महादेवीं नौमि भक्तवरप्रदाम्।।

अपने भक्तों को वर देने वाली उस महादेवी शारिका जी को मैं प्रणाम करता हूं जिसकी कृपा से मेरी भेद बुद्धिरूपी अविद्या सदा के लिए टल गई।।४५।।

श्री शक्तिं शारिकां नौमि सर्वदां ब्रह्मवादिनीम्।
स्मरणेनापि यस्यास्तु महामोहः प्रलीयते।।

मैं सब कुछ देने वाली ब्रह्मवादिनी शारिका जी को प्रणाम करता हूं जिसके स्मरणमात्र से ही महान मोह नष्ट हो जाता है।।४६।।

यस्याः दर्शन मात्रेण महानन्दाम्बुधौमम।
मनः प्रयाति विलीनत्वं तां शारिकां वच्म्यहंनुकिम।।

जिसके दर्शनमात्र से मेरा मन महान आनंदरूपी सागर में डूब जाता है उस देवी शारिका के विषय में, मैं अधिक और क्या कहूं।।४७।।

सर्वामंगल संहर्त्रीं सर्वमंगलकारिणीम् ।
शारिके! त्वां सदा नौमि स्थितं स्वां प्रतिभामिव ।।

सभी बुराइयों को दूर करने वाली और सारे शुभ फलों को देनेवाली शारिका जी को, मैं, निजी संवित् प्रभा की तरह देहाभिमान को त्यागकर पूर्णरूप से नमन करता हूं।।४८।।

श्री विद्यया पूजित पादुकायै
श्री शंभु सेवार्थ गृहीत कायै।
रामेश्वरस्याखिल बोध मूर्त्यै
देव्यै नमः ज्ञानद शारिकायै।।

श्री विद्या से पूजित चरण कमलों वाली, गुरुरूप शिव की सेवा के लिए मूर्तिमती, आचार्य रामेश्वर की अनादि बोधकला रूपी, ज्ञानप्रदा शारिका देवी को मेरा नमस्कार हो।।४९।।

श्री देशिकाऽवाप्त शिवात्मभावः
श्री शारिका दत्त कवित्व शक्तिः।
रामेश्वरो मैथिल भूसुरोऽयं
श्री शारिकायाः स्तुतिं प्रगीतवान्।।

शैवी संप्रदाय के गुरु ईश्वरस्वरूप लक्ष्मण जी महाराज से शिवभाव को और उनकी शिष्या शारिका देवी से कवित्व शक्ति को पाकर मिथिला देशवासी ब्राह्मण आचार्य रामेश्वर ने देवी शारिका जी का गुणगान किया।।५०।।

■■■■■■■■■■■■■

कामना, भक्त की

लेखक व अनुवादक–प्रो० मखनलाल कुकिलू

'शा' शान्तिं राति भक्तेभ्यो
'रि' रिपून हन्ति सर्वथा।
'का' कायां पापनिर्मुक्तां
करोति स्मरणेन द्राक्।।

(अपने नाम के तीन अक्षरों में से पहले अक्षर) 'शा' के स्मरण करने से शारिका भक्तों को शीघ्र शान्ति प्रदान करती है। 'रि' (अक्षर) से काम क्रोधादि शत्रुओं का सर्वथा हनन करती है। 'का' (अक्षर) से अपने भक्तों की काया को पाप मुक्त बनाती है।।१।।

गुरुरूपधरा गुर्वी अख्यातिर्हरणे क्षमा।
ज्ञानशक्तिर्भवद्रम्या सर्वोत्कर्षेण वर्तते।।

सभी अविद्या को मिटाने में समर्थ, गुरुरूप को धारण करने वाली तथा गौरवमयी आपकी रमणीय ज्ञानशक्ति हर प्रकार से जयनशील है।।२।।

ज्ञायते न भवद्रूपं ध्यायते न भवद्वपुः।
स्म्रियते न भवन्नाम अर्चा का कीदृशी स्तुतिः।।

हे शारिका देवी! आपका रूप किसी के द्वारा जाना नहीं जाता, आपके स्वरूप का ध्यान कोई नहीं कर सकता है। आपके नाम का स्मरण किसी के द्वारा नहीं किया जा सकता। अतः आपकी पूजा कैसे होवे और आपकी स्तुति कैसे की जाय।।३।।

त्वत्पादस्मरणे लग्ना निष्ठाहि सुदृढ़ा मम।
सुदिनेऽद्य तवास्त्येषा भवाब्धिप्लवने क्षमा।।

हे मां! आपके चरण कमलों को स्मरण करने में लगी हुई मेरी आस्था बलवती होती जा रही है। (मुझे आशा है) कि यही आस्था इस शुभ

दिन पर आज मुझे इस संसार सागर को लांघने में समर्थ है।।४।।

वर्त्येकास्ति भवन्नाम दीपो देहः ज्वलन् मम।
तैलं त्वत्सुस्मृतिर्मातः संगमोऽयं सुखावहः।।

हे मां! आपका नाम एक बाती है। मेरा (त्रिविध तापों से) जलता हुआ शरीर दीपक है और आपकी स्मृति (दीपक में काम आने वाला) तेल है। जैसे दीपक बाती और तेल का संगम अन्धकार को मिटाकर चारों ओर प्रकाश को फैलाता है वैसे ही आप का नाम मेरे शरीर और आपकी स्मृति का संगम भी मेरे अविद्या रूपी अन्धकार को नष्ट करके सुखदायक हो गया है।।५।।

मनोरथ शतैः पूर्णं अस्तीदमीहितं मम।
वृत्तं यत्र व्रणं भीष्मं तत्रौषध प्रदेहि मे।।

हे मां! सैकड़ों अभिलाषाओं से पूर्ण मेरी अन्तरात्मा की यही पुकार है कि जहां-जहां मेरे शरीर में त्रिविध मलरूपी (आणवमल, मायीय और कार्ममल) भयानक घाव विद्यमान है वहां-वहां इन पर ज्ञान की मरहम

पट्टी करके कृतार्थ करें।।६।।

प्रार्थनायां भवल्लीनः यस्त्वां स्तौति अहर्निशम्।
व्येति दुःखं महदुग्रं लभते वाञ्छितं फलम्।।

आप की प्रार्थना में लीन जो कोई साधक रात दिन आपकी स्तुति करता है उसके महान दुःख टल जाते हैं और वह वांछित फल पाता है।।७।।

भवत्पादनखदीप्तिर्हन्ति मायामलं मम।
भातं भिन्नतया विश्वं स्वस्थं द्राक् अवलोकितम्।।

हे मां! आपके चरण कमलों के नाखूनों के प्रकाश ने मेरे मायीय मल को नष्ट किया और अपने से भिन्न दिखाई देने वाले संसार को अपने में ही अनायास प्रदर्शित कराया।।८।।

श्री शारिके! शरण्ये त्वं मम दुःखमपाकुरु।
भक्तानां वरदात्री त्वं ऋद्धिं सिद्धिं प्रयच्छ मे।।

हे शारिका देवी! हे सबों को शरण देने वाली मां! आप मेरे सांसारिक दुःखों को दूर करिये। आप तो अपने भक्तों को वर देने वाली हैं, मुझे

भी ऋद्धि और सिद्धि प्रदान करके कृतार्थ करिये।।६।।

त्वमगाध गुणज्ञान मन्थरा
भवतमापहरी सुचिन्द्रका।
ज्ञानहेतिः मलस्य दाहिका
भव सदैव मयि अकोपना।।

हे शारिका देवी! आप ज्ञान और गुणों का अगाध भण्डार हो, सांसारिक अन्धकार को हटाने वाली निर्मल चांदनी हो, और सारे मलों को जलाने वाली ज्ञान की ज्वाला हो। अतः आप मुझ पर सदा प्रसन्न रहिये।।१०।।